Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 1 अंक: 08 , 29 सितम्बर, शुक्रवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक 9879141480 4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

नाबालिग समेत दो वाहन चोर धरे गए

छह बाइक व दो स्कूटी बरामद

नई दिल्ली। **बाहरी दिल्ली के** सुल्तानपुरी थाना क्षेत्र में पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई कर वाहन की चोरी के आरोप में एक बदमाश को नाबालिग समेत पकड़ा है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान तिलक नगर निवासी प्रथम आनंद उर्फ तुषार (19) के रूप में हुई है, जबकि दूसरा अभी नाबालिग बताया जा रहा है। पुलिस उपायुक्त पंकज सिंह के मुताबिक सुल्तानपुरी थाना इलाके में चोरी और लूट की वारदातें रोकने के लिए इंस्पेक्टर अशोक कुमार के नेतृत्व में पुलिस बदमाशों के खिलाफ अभियान चला रही है। 26 सितम्बर को पुलिस टीम को एक गुप्त सूचना के आधार पर कुछ बदमाशों के सुल्तानपुरी इलाके में गंदा नाला के पास आने की जानकारी मिली। प्राप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने विशेष पिकेट लगाकर शाम 6 बजे बाइक सवार सवार दो युवकों को पकड़। जांच-पड़ताल में उनकी बाइक चोरी की पाई गई। इसके बाकद प्रथम आनंद और उसके नाबालिग साथी को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। पूछताछ में दोनों ने वाहन चोरी के कई मामलों में शामिल होने की बात कबूली। इस दौरान पता चला कि आरोपी प्रथम अपने नाबालिग साथी को चोरी का प्रशिक्षण दे रहा था। दोनों की निशानदेही पर पुलिस ने चोरी की छह बाइक व दो स्कूटी बरामद की। पुलिस ने इनके पकड़े जाने से अलग-अलग थानों में दर्ज वाहन चोरी आठ मामले सुलझाने का दावा किया है।

क्या दिल्ली पुलिस को मिल पाएगी हनीप्रीत

नई दिल्ली। डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख राम रहीम की दत्तक पुत्री हनीप्रीत इंसां की तलाश में दिल्ली पुलिस भी जुट गई है। पुलिस सूत्रों ने दावा किया कि हनीप्रीत के खिलाफ लुकआउट नोटिस तथा गिरफ्तारी का वारंट जारी होने के चलते दिल्ली पुलिस इस हनीप्रीत की तलाश में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहती। इसी क्रम में बुधवार को हरियाणा पुलिस ने हनीप्रीत की तलाश में दिल्ली पुलिस के साथ संयुक्त रूप से मियांवाली नगर में छापेमारी की, लेकिन उसका कोई भी सुराग मिला। पुलिस सूत्रों के मुताबिक हनीप्रीत के दिल्ली में मौजूद होने की बात उजागर होने के बाद दिल्ली पुलिस का एक-एक जवान अलर्ट है। जहां दिल्ली में प्रवेश के लिए सभी बार्डरों पर हर वाहन की गहन चेकिंग की जा रही है। हनीप्रीत के बारे में कोई भी सुराग मिलने पर सभी मुखबीरों व हरपल को मुस्तैद रहने को कहा गया है। पुलिस सूत्रों ने दावा किया कि वकील से मिलने के दौरान हनीप्रीत की तस्वीरें सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हुई थी, हालांकि बुर्कानशीं होने के चलते उसकी वास्तविक तौर पर पहचान नहीं हो पाई थी। फ्लिहाल पुलिस टीमे हनीप्रीत के सम्पर्क में रहने वाले लोगों पर खास नजर रख रही है, इनमें उसके एडवोकेट से लेकर गुरमीत राम रहीम के संपर्क में रहने वाले कई अन्य लोगों समेत डेरे की प्रापर्टी के केयरटेकर आदि शामिल हैं। पुलिस को शक है कि गिरफ्तारी से बजने के लिए हनीप्रीत फेन का इस्तेमाल नहीं कर रही है और बाचीत के लिए सिर्फ खास लोगों के फोन का इस्तेमाल इंटरनेट पर होने वाली वाट्सएप कॉल या फिर चेंटिग के लिए कर रही है। हनीप्रीत को लेकर दिल्ली पुलिस की पैनी नजर लाजपत नगर, नांगलोई, मियांवालीनगर, लाजपतनगर और ग्रेटर कैलाश पार्ट टू एंक्लेव पर लगातार बनी हुई है। ऐसे स्थलों पर पुलिस बल निगरानी कर रहे हैं।

शब्बीर शाह की न्यायिक हिरासत 13 तक बढ़ी

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने आतंकवादी गतिविधियों के कथित वित्तपोषण के लिये साल 2005 के धन शोधन के मामले में कश्मीरी अलगाववादी नेता शब्बीर शाह और एक संदिग्ध हवाला कारोबारी की न्यायिक हिरासत बुधवार को 13 अक्टूबर तक बढ़ा दी। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश सिद्धार्थ शर्मा ने आरोपी शाह और कथित हवाला कारोबारी मोहम्मद असलम वानी को आरोप पत्र की प्रति भी दी और मामले की अगली सुनवाई की तारीख 13 अक्टूबर को निर्धारित कर दी। उस दौरान अदालत रिपोर्ट और उसके साथ दाखिल अन्य दस्तावेजों की जांच करेगी। प्रवर्तन निदेशालय ने इस मामले में 23 सितम्बर को आरोप पत्र दायर किया था। मामला अगस्त 2005 का है।

'भगत सिंह अगर हिन्दुस्तान का हीरो है तो पाकिस्तान का बेटा है'

नई दिल्ली। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायक भगत सिंह को ब्रिटिश पुलिस अफ्सर सांडर्स की हत्या के मामले 23 मार्च 1931 को फांसी दी गई थी। उनका जन्म 28 सितंबर 1907 में पाकिस्तान में हुआ था। उनकी फांसी के करीब 83 साल बाद पाकिस्तान की लाहौर कोर्ट में भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन के अध्यक्ष वकील इम्तियाज राशिद कुरैशी ने कोर्ट में याचिका दायर की। इम्तियाज राशिद की याचिका पर दोबारा सुनवाई शुरू की गई। 24 मई 2013 को इस मुकदमे में पहली सुनवाई हुई। इम्तियाज कुरैशी का कहना है कि भगत सिंह की न्यायिक हत्या की गई थी वो बेगुनाह थे। इम्तियाज के मुताबिक जिस केस में भगत सिंह को फांसी दी गई उस एफआईआर में उनका नाम तक नहीं था ना ही इस केस में किसी की गवाही ली गई। उन्होंने कोर्ट से कहा कि भगत सिंह को खुद पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने भी श्रद्धांजलि दी थी। इम्तियाज् ने कहा कि भगत सिंह हमारे लिए भी हीरो हैं।

सावल: आपके लिए भगत सिंह क्या हैं?

जवाब: भगत सिंह पाकिस्तान सहित पूरी दुनिया के लिए हीरो हैं। वो मज़लूम (जिसपर जुल्म किया गया हो) और पिसे हुए लोगों की आवाज थे। मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि भगत सिंह जैसा बहादुर शख्स आज तक पाकिस्तान में पैदा नहीं हुआ।

सवाल : आपको ये खयाल कब आया कि भगत सिंह को इंसाफ मिलना चाहिए?

जवाब: मेरे बड़ों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था और उन्हीं इनकलाबी लोगों का खून मेरे रगों में शामिल है। उन्होंने ही मुझे भगत सिंह को पढ़ने पर मजबूर किया। जब मैंने भगत सिंह को पढ़ा तो मुझे वो निर्दोष लगे। जब मैंने उनका पूरा केस पढ़ा तो मुझे पता चला कि उस वक्त 450 लोगों को सफाई का मौका ही नहीं दिया गया था। फिर 83 साल बाद कोर्ट से ऑर्डर लेकर मैंने वो एफआईआर निकलवाई। एफआईआर में मैंने देखा कि इसमें ना भगत सिंह का नाम था ना सुखदेव का नाम।

बस एक शख्स का हुलिया उसमें दिया हुआ था जिससे बस इतना जाहिर हो रहा था कि वो शख्स हिंदू है। एफआईआर में लंबाई करीब 5 फुट लिखी हुई है। जब मैंने पूरा केस पढ़ा तो मुझे पता चला ये पूरा ट्रायल फेक था।

सवाल : हिन्दुस्तान में भगत सिंह हीरो हैं, क्या पाकिस्तान में भी भगत सिंह को हीरो के तौर पर देखा जाता है?

जवाब: भगत सिंह दोनों ही मुल्कों के हीरो थे वो हमारी आज़ादी के हीरो थे। पाकिस्तान में हर साल हैंगिंग डे मनाया जाता है।

भगत सिंह केस को दोबारा खोलने का मेरा एक और भी मकसद है। हम दुनिया को एक मैसेज देना चाहते हैं कि मुसलमान, अपने हीरो का एहतराम (इज्जत) करते हैं फिर चाहें वो किसी भी मुल्क का हो। अब जब इस केस का दोबारा ट्रायल शुरू होगा तो भगत सिंह और सुखदेव दोनों के परिवार हमारे साथ खड़े होंगे। सलमान खुर्शीद समेत कई बड़े वकील इस केस में हमारे साथ होंगे।

तरुण तेजपाल रेप केस: आरोप तय, अगली सुनवाई 21 नवंबर को

नई दिल्ली। पूर्व महिला सहयोगी के यौन उत्पीड़न और बलात्कार के आरोपी वरिष्ठ पत्रकार तरुण तेजपाल के मामले में अगली सुनवाई 21 नवंबर को होगी। पिछली सुनवाई में गोवा की एक अदालत ने करीब चार साल पहले मामले में तेजपाल के खिलाफ आरोप तय करने के आदेश दिए थे। सरकारी वकील के अनुसार, अदालत ने कहा कि तेजपाल (54) के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 341 (दोषपूर्ण अवरोध), 342 (दोषपूर्ण परिरोध), 350 (आपराधिक बल), 354 (ए) और (बी) (महिला पर यौन प्रवत्ति की टिप्पणियां और उस पर आपराधिक बल का प्रयोग) और 376 (बलात्कार) के तहत आरोप तय किया है।

उच्चतम न्यायालय ने तरुण तेजपाल को अंतरिम जमानत दी

तहलका मामला: नाम उजागर करने पर प्राथमिकी दर्ज

गौरतलब है कि तेजपाल की एक कनिष्ठ सहयोगी ने उन पर 2013 में एक कार्यक्रम के दौरान गोवा के एक पांच सितारा होटल में एक लिफ्ट के अंदर उनका यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया था। तेजपाल अभी जमानत पर हैं।

कानपुर : ड्राइवर की ड्यूटी हुई पूरी तो मालगाड़ी को लगा दिया ताला

कानपुर। मालगाड़ी का चालक ट्रेन में ताला लगाकर चला गया। कानपुर में गंगाघाट रेलवे स्टेशन पर बुधवार सुबह लखनऊ की ओर जा रही मालगाड़ी के चालक ने ड्यूटी पूरी होते ही ट्रेन खड़ी कर दी और पहिए में ताला जड़कर स्टेशन मास्टर को मेमो थमाकर घर चला गया। शाम तक लखनऊ से दूसरा ड्राइवर न आने के कारण मालगाड़ी गंगाघाट स्टेशन पर ही खड़ी रही। कानपुर से लखनऊ की ओर सुबह 06:40 बजे मालगाड़ी डाउन लाइन पर आकर खड़ी हुई। सिग्नल न मिलने के कारण ट्रेन कई घंटे वहीं स्टेशन पर खड़ी रही। साढ़े ग्यारह बजते ही मालगाड़ी के चालक व गार्ड की बारह घंटे की ड्यूटी पूरी हो गई। इसके बाद चालक ने ट्रेन के पहिए में ताला लगा दिया और स्टेशन मास्टर को मेमो थमा कर घर चला गया। इस दौरान शताब्दी समेत कई एक्सप्रेस ट्रेनों को लूप लाइन से गुजारा गया।

गांव में रहते समय पुजारी की पत्नी से बन गए थे युवक के अवैध संबंध

अवैध संबंध में पुजारी दंपति ने की युवक की हत्या गांव में रहते समय पुजारी की

पूर्वी दिल्ली। गांधीनगर क्षेत्र में पुजारी और उसकी पत्नी ने एक युवक की हत्या कर दी। 48 घंटे से ज्यादा समय तक शव मंदिर की छत पर बने स्टोर रूम में पड़ा रहा। बुधवार को पुलिस को सूचना मिली कि मंदिर की छत पर स्टोर रूम में आग लगी है और अंदर कोई शख्स जल रहा है। इस पर पुलिस मौके पर पहुंची। अधजले शव को बरामद किया तो पता चला कि हत्या दो-तीन दिन पहले की गई है। शक के आधार पर पुलिस ने मंदिर के पुजारी लखन दुबे (30) को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो उसने सारा राज उगल दिया। पुलिस ने लखन के साथ उसकी पत्नी कमलेश को भी गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के अनुसार मूल रूप से गांव मुखराई, गोवर्धन मथुरा निवासी लखन गली नम्बर चार, कैलाशनगर स्थित प्राचीन शिव मंदिर में पुजारी है। उसकी पत्नी कुछ समय पहले गांव में रहती थी। इसी दौरान कमलेश के पड़ोस में रहने वाले चंद्रशेखर दुबे (35) के साथ उसके अवैध संबंध बन गए।

जब इसका पता लखन को लगा तो वह ढाई महीने पहले गांव से कमलेश को दिल्ली ले आया, जहां कमलेश ने चंद्रशेखर के साथ अवैध संबंध की बात स्वीकार ली। इसके बाद लखन इस शर्त पर पत्नी को साथ रखने के लिए तैयार हुआ कि वह चंद्रशेखर को मारने में उसका साथ देगी। गत रविवार को कमलेश ने फोन कर चंद्रशेखर को कहा कि लखन बाहर गया है, वह दिल्ली आ जाए। इस पर रविवार शाम को चंद्रशेखर दिल्ली पहुंच गया। यहां मंदिर के ऊपर बने स्टोर रूम में कमलेश ने चंद्रशेखर को बैठने को कहा। चाय लाने के बहाने वह बाहर निकल गई। इसके बाद लखन के साथ वह स्टोर रूम में पहुंची, जहां दोनों ने पहले रस्सी से उसका गला घोंट दिया। इसके बाद चाकू से सिर पर भी वार किया। बुधवार सुबह पांच बजे उन्होंने शव पर दरी डालकर आग लगा दी। लखन ने फोन पर पुलिस को स्टोर रूम में आग लगने की सूचना दी।

पुलिस मौके पर पहुंची तो उसे शव बरामद हुआ। लखन ने पुलिस को कहानी बताई कि किसी ने उसे मारकर स्टोर रूम में पहुंच दिया, लेकिन कहीं भी खून के निशान नहीं थे और शव भी दो-तीन दिन पुराना लग रहा था। पुलिस उपायुक्त नुपूर प्रसाद ने लखन को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो उसने अपना जुर्म कबूल लिया।

सीबीएसई का फरमान: बिना आधार कार्ड के नहीं होगा छात्रों का बोर्ड एग्जाम के लिए रजिस्ट्रेशन

नई दिल्ली। सीबीएसई बोर्ड ने 9वीं और 11वीं के रजिस्ट्रेशन के लिए आधार कार्ड अनिवार्य कर दिया गया है। अब छात्र बिना आधार कार्ड के रजिस्ट्रेशन फॉर्म नहीं भर सकेंगे। सत्र 2017-18 के लिए 26 सितंबर रजिस्ट्रेशन शुरू हो गए हैं और इससे पहले ही बोर्ड ने यह निर्देश जारी किया है। रजिस्ट्रेशन फॉर्म भरने में विलम्ब शुल्क की राशि बढ़ा दी गई है। स्कूल प्रबंधन छात्रों की संख्या में घालमेल नहीं कर सकें, इसे लेकर बोर्ड ने छात्रों की संख्या के अनुपात में सेक्शन की जानकारी भी मांगी है। इसकी जांच बोर्ड करेगा। रजिस्ट्रेशन के बाद अगर इसमें कोई बदलाव होता है तो संबंधित स्कूल का रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिया जाएगा। सीबीएसई बोर्ड के परीक्षा नियंत्रक केके चौधरी ने इस संबंध में सभी स्कूल प्रबंधन को निर्देश जारी किया है। बोर्ड ने निर्देश दिया है कि चार सेक्शन भरने के बाद संबंधित स्कूल 160 से अधिक छात्रों का फॉर्म नहीं भर सकता है।

केजरीवाल का निर्णय भाजपा की राजनीतिक जीत : तिवारी

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के कैबिनेट के निर्णय को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी ने अपनी पार्टी के दवाब का नतीजा बताया। जबकि विधानसभा में नेता विपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कैबिनेट के इस निर्णय पर तकनीकी सवाल उठाये हैं। उनका कहना है कि सरकार का यह निर्णय हवा-हवाई है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि गेस्ट टीचर लंबे समय से संघर्षरत थे और भाजपा उनकी मांग का समर्थन कर रही थी। दिल्ली सरकार का 15 हजार गेस्ट टीचरों को नियमित करने का निर्णय उनके राजनीतिक दबाव में लिया गया है। सही प्रक्रिया नहीं अपना रही सरकार : विधानसभा में नेता विपक्ष विजेंद्र गुप्ता का कहना है कि केजरीवाल सरकार का यह निर्णय गेस्ट टीचरों को गुमराह करने वाला है। इसके पीछे उनका तर्क है कि केजरीवाल सरकार ने जो निर्णय लिया है, उसमें उनकी ईमानदारी नजर नहीं आ रही है। जबकि होना रह चाहिए कि सरकार कैबिनेट बिल पास करने से पहले संबंधित विभागों से एनओसी लेती। इससे गेस्ट टीचरों को नियमित करने का रास्ता साफ हो जाता। नेता विपक्ष का दावा है कि सरकार ने अभी तक गेस्ट टीचरों को नियमित करने को लेकर कोई ठोस नीति तैयार नहीं की है।

'स्वर कोकिला' लता के बावर्ची ने मिलाया था उनके खाने में धीमा जहर, जानें ऐसे ही कुछ और दिलचस्प फैक्ट

नई दिल्ली। भारतीय सिनेमा जगत में पिछले छह दशक से लता मंगेश्कर ने अपनी मधुर आवाज से लोगों को अपना दीवाना बनाया हुआ है। लेकिन उनके बारे में कुछ ऐसे दिलचस्प फैक्ट्स हैं जिनसे आप आज तक अंजान हैं। आज लता मंगेशकर अपना 89वां बर्थडे सेलिब्रेट कर रही हैं। मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में जन्मी लता एक मध्यम वर्गीय मराठी परिवार से हैं। उन्होंने साल 1942 में 'किटी हसाल' के लिए अपना पहला गाना गाया लेकिन उनके पिता दीनानाथ मंगेश्कर को लता का फिल्मों के लिए गाना पसंद नहीं आया और उन्होंने उस फिल्म से लता के गाए गीत को हटवा दिया था। हालांकि इसी साल लता को 'पहली मंगलगौर' में अभिनय करने का मौका मिला। लता की पहली कमाई 25 रुपए थी जो उन्हें एक कार्यक्रम में स्टेज पर गाने के दौरान मिली थी।

एक दिन में 12 मिर्चे तक खा लेती हैं लता

बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि लता का असली नाम हेमा हरिदकर है। बचपन के दिनों से उन्हें रेडियो सुनने का बड़ा ही शौक था। 18 साल की उम्र में उन्होंने अपना पहला रेडियो खरीदा था और रेडियो ऑन करते ही उन्हें के.एल.सहगल की मृत्यु की खबर मिली थी। जिसके बाद उन्होंने वह रेडियो दुकानदार को वापस लौटा दिया। लता को अपने बचपन के दिनों में साईकिल चलाने का काफी शौक था जो पूरा नहीं हो सका। बता दें कि

उन्होंने अपनी पहली कार 8000 रुपये मे खरीदी थी। स्पाइसी खाने की शौकीन लता एक दिन में तकरीबन 12 मिर्चे तक खा लेती हैं। उनका मानना है कि मिर्च खाने से गले की मिठास बढ़ती है। लता को किक्रेट देखने का भी काफी शौक रहा है। लार्डस में उनकी एक सीट हमेशा रिजर्व रहती हैं

हत्या को आत्महत्या का रूप देने के लिए सरसों का तेल डालकर की शव जलाने की कोशिश

बच्चों को डांटा तो बहू ने की दिव्यांग सास की हत्या

नई दिल्ली। मंडावली क्षेत्र में दिल दहला देने वाले घटनाक्रम के तहत एक महिला ने अपनी दिव्यांग सास की पटरे से पीट-पीटकर हत्या कर दी और हत्या को आत्महत्या का रूप देने के लिए सास का का शव सरसों का तेल डालकर जलाने की कोशिश की। पुलिस ने मृतसास स्वर्णा कपूर (62) का शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर बहू कंचन कपूर (29) को गिरफ्तार कर उससे खून व सरसों के तेल से सने कपड़े, वारदात में प्रयुक्त पटरा व अन्य सामान बरामद किया है। पुलिस के मुताबिक स्वर्णा कपूर सपरिवार ए-14, गली नम्बर-2, शांति मार्ग, मंडावली में रहती थीं। उनके परिवार में बेटा सुमित (32), बहू कंचन व तीन बच्चे हैं। सुमित रेस्टोरेंट में असिस्टेंट मैंनेजर है। पुलिस के मुताबिक स्वर्णा भूतल पर रहती थी, जबकि उनका बेटा दूसरी मंजिल पर रहता है। स्वर्णा के पति की पांच-छह साल पहले मौत हो चुकी है। पिछले कुछ साल से उनके शरीर का आधा हिस्सा काम नहीं कर रहा है। इसके चलते वह जमीन पर घिसटकर चलती थीं। बेटे-बहू को उनके काम करने पड़ते थे। इसको लेकर अक्सर कंचन व स्वर्णा में झगड़ा होता था। मंगलवार रात लगभग साढ़े दस बजे कंचन के बच्चे शोर मचा रहे थे। स्वर्णा के बच्चों को शांत करने के लिए कहने पर सास-बहू में झगड़ा हो गया। गुस्से में कंचन ने वहां रखा लकड़ी का पटरा स्वर्णा के सिर पर मार दिया और चोट लगने के कारण सास की मौत हो गई। हत्या को आत्महत्या का रूप देने के लिए उसने घर में मिट्टी का तेल ढूंढा और न मिलने पर सरसों का तेल डालकर स्वर्णा का शव जलाने की कोशिश की, जिसके चलते शव का कमर के नीचे का हिस्सा जल गया। देर रात 12 बजे सुमित घर पहुंचा तो उसने मां को मृत पाया। कंचन मां की मौत पर कुछ जवाब नहीं दे पाई। इसके बाद सुमित ने इस बात की सूचना पुलिस को दी। पुलिस पूछताछ में कंचन बार-बार बयान बदलने लगी। पूछताछ में कंचन ने सास की हत्या कर उसे आत्महत्या का रूप देने के लिए शव जलाने की कोशिश करना स्वीकार किया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

साधु को दिन में देखना, रात में देखना और तब साधु पर विास करना -रामकृष्ण परमहंस त्रिलोचन शास्त्री

''राइट टू रिप्लाई'

अमेरिका से भारत का स्पष्ट रूप से यह कहना कि अफगानिस्तान में हम अपनी सेना नहीं भेजेंगे कुछ समय के लिए पाकिस्तान को राहत दे सकता है। आखिर उसकी चाहत यही है कि किसी तरह अफगानिस्तान में भारतीय भूमिका ज्यादा विस्तारित न हो। पाकिस्तान की नीति लंबे समय तक अफगानिस्तान को अपने उपनिवेश के समान इस्तेमाल करने की रही है। तालिबानों के शासन के खात्मे के बाद से वहां अमेरिका सहित नाटो सैनिकों की भूमिका ने उसकी यह स्थिति खत्म कर दी। धीरे-धीरे अफगानिस्तान के शासकों को भी यह महसूस हो गया कि उनके यहां आतंकवाद को बढ़ावा देने में पाकिस्तान की भूमिका है। इस कारण अफगानिस्तान इस समय पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद की उसी तरह आलोचना करता है जिस तरह भारत। इसलिए भारत की ना कहने का मतलब यह नहीं है कि पाकिस्तान के लिए अफगानिस्तान का मैदान खुल जाएगा। जिस दिन अमेरिकी रक्षा मंत्री जेम्स मैटिस भारत में रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण से बात कर रहे थे उसी दिन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अफगानिस्तान पर चर्चा हो रही थी, जिसमें अफगानिस्तान के विदेश मंत्री सलाहुद्दीन रब्बानी ने पाकिस्तान पर हमला करते हुए कहा कि अफगानिस्तान पर असर डाल रहे आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ की पीड़ा पड़ोसी देश की लंबे समय से नीति रही है ताकि अफगानिस्तान अस्थिर रहे। इसकी जड़ें मेरे देश के बाहर स्थित पनाहगाहों में स्थित है। वस्तुतः सुरक्षा परिषद में भारत और अफगानिस्तान की आवाज एक थी। अफगानिस्तान ने भारत के साथ सामरिक साझेदारी कायम किया है। पाकिस्तान की अवहेलना करते हुए अफगानिस्तान पुनर्निर्माण एवं विकास कायरे में भारत की मदद एवं भूमिका का खुलकर स्वागत कर रहा है।

भारत की सेना न भेजने की नीति एक दूरगामी सोच के तहत है, लेकिन अफगानिस्तान में वह हर प्रकार की असैन्य भूमिका निभाता रहेगा। निर्मला सीतारमण ने साफ कर दिया है कि इन मामलों में वह किसी सूरत में पीछे नहीं हटेगा। मतलब यह कि पाकिस्तान को केवल सेना भेजने के अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के आग्रह को ठुकरा देने से कोई गलतफहमी पैदा नहीं होनी चाहिए। भारत की उपस्थिति वहां विस्तारित होती रहेगी। कौन जाने भविष्य में भारत सेना भेजने पर भी विचार करे। पाकिस्तान को इस बात की चिंता ज्यादा होनी चाहिए कि आतंकवाद के पनाहगाह के रूप में वह कुख्यात हो रहा है। चीन ने भी उसे आतंकियों की शरणस्थली मान लिया है।

कोहली की आक्रामकता

देश में घट रहे रोजगार को लेकर सरकार की चिंता बिल्कुल वाजिब है। इन सब चिंताओं से पार पाने के लिए केंद्र सरकार अपनी नीतियों और श्रम कानूनों को बदलने या उदार करने के बारे में गंभीरता से सोच रही है। हर साल सैकड़ों बेरोजगारों को नौकरी देने के जिस वादे को भाजपा ने 2014 में चुनावी मुद्दा बनाया था और सत्ता पर काबिज हुई थी, अब वही वादा सरकार के जी का जंजाल बनता जा रहा है। नतीजतन, सरकार को 2019 में होने वाले आम चुनाव में विपक्ष के आक्रामक रुख के साथ-साथ जनता के गुस्से से बचने के लिए ''कुछ हटकर' सोचने की जरूरत महसूस हुई।

कई मोर्चों पर उम्मीद और वादे के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाने की चिंता मोदी सरकार के लिए बेहद परेशानी का सबब है और इसकी काट के लिए अब वह अपनी कई नीतियों को बदलने पर विचारशील है। सरकार के लिए सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात सुस्त के मुंह की तरह बढ़ती बेरोजगारी है।

इन्हीं सब मसलों को लेकर नीति आयोग के कार्यकारी समूह की बैठक में सरकार के आला अफसर इस बात पर पूरी तरह से मुतमईन दिखे कि सिर्फ कृषि ही रोजगार सृजन की दशा और दिशा को बहुरंगी बना सकते हैं। यानी कृषि जहां अभी भी सबसे ज्यादा लोगों को रोजगार मिला हुआ है, उसे बढ़ाया जाए। कृषि की तरफ आशाभरी नजरों से देखने के पीछे सरकार की मंशा इस वजह से है कि दुनिया में अर्थ का प्रमुख आधार खेती-किसानी ही है। साथ ही कृषि में कॉरियर आप्शन की कमी नहीं है।

जरूरत है तो बस संसाधनों की उपलब्धता को बेहतर बनाने की। हां, व्यवस्था को चुस्त करना भी महत्वपूर्ण मसला है। वैसे सरकार को इस बात का इल्म हो चुका है कि उद्योगों में भारी निवेश ने सिर्फ रोजगार देने का हौव्वा ही खड़ा किया। जमीनी तौर पर इसका असर सिफर ही हुआ है। अभी ज्यादा वक्त नहीं बीता जब 2008 में विश्व के ज्यादातर देश भारी आर्थिक मंदी की चपेट में थे लेकिन भारत में इसका अंश मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। और इसकी वजह खाद्यान्नों पर भारत की निर्भरता ही थी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कृषि क्षेत्र की आय बढ़ने से अन्य क्षेत्रों का भी बाजार विस्तार लेता है। सो, चुनौतियां कई हैं और सरकार के लिए वक्त बेहद कम।

सत्संग

प्रकृति का अनुशासन

मानवीय विकास का वास्तविक स्वरूप निर्धारित करना हो, तो यह मानकर नहीं चला जा सकता कि मनुष्य शरीर पाने तक ही उसकी अंतिम परिधि है। उसे विकासोन्मुख होने के लिए शरीरगत जीवन यापन को भी सब कुछ न मानकर अपनी सत्ता चेतना के साथ जोड़नी पड़ेगी, जो इस ब्रह्मांड पर अनुशासन करती और अंतराल को सुविकसित, स्वच्छ बना लेने वालों पर अपनी उच्च स्तरीय अनुकंपा बरसाती है। साथ ही मनुष्य को इस प्रकार का चिंतन अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित करती है कि उसके अंतराल में अति महत्त्वपूर्ण क्षमताओं का भी भंडार भरा पड़ा है, जिसे थोड़ा विकसित कर लेने पर वह काया की दृष्टि से यथावत रहते हुए भी व्यक्तित्व की दृष्टि से महानतम बन सकता है। इस अध्यात्म विकास के तत्वज्ञान के अनुरूप चेतना को विकसित, परिष्कृत, समर्थ, विलक्षण बनाने का द्वार मनुष्य शरीर मिलने के उपरांत खुलता है। इससे पूर्व तो वह मात्र जीवधारी ही बनकर रहता है। साथ ही प्रकृति का अनुशासन मानने के लिए बाधित रहता है। उसे प्रकृति पर अनुशासन करने, उसे अपने अनुकूल बनाने की विद्या का ज्ञान तक नहीं होता। प्रकृति पर परमात्मा का स्वामित्व है। दूसरा हस्तांतरण उसके युवराज मनुष्य को उसकी परिपता विकसित होते ही उपलब्ध होने लगता है। यह दूसरी बात है कि वह उस अनुदान का कितनी बुद्धिमत्ता के साथ किन प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त करता है। विकास की मानवीय परत में उभरते ही उसे आत्मबोध की एक नई उपलब्धि हस्तगत होती है वह अनुभव करता है कि काय-कलेवर उसका समग्र स्वरूप नहीं वरन एक वाहन उपकरण आच्छादन मात्र है। उसके भीतर रहने वाली चेतना ही मनुष्य को ऊंचा उठाती, नीचे गिराती है। मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदाता है। मनुष्य अपने भाग्य निर्माता आप है। वह प्रकृति की कठपुतली मात्र नहीं है। अन्य प्राणियों की तरह मात्र निर्वाह ही उसकी एक मात्र आवश्यकता नहीं है। वरन व्यक्तित्व का स्तर उठाकर जीवन सज्जा को, अनेक उपलब्धियों-विभूतियों से अलंकृत करना भी एक विशिष्ट उद्देश्य है। जब तक यह विचारणा नहीं उठती, तब तक वस्तुतः मनुष्य नर-पशु ही रहता है और इंद्रिय लिप्साओं और मानसिक तृष्णाओं तक ही उसकी गतिविधियां सीमित रहती हैं, न वह जीवन का महत्त्व समझ पाता है और न उसे चेतना की पृथकता, विशिष्टता संबंधी कुछ ज्ञान होता है।

''नई सामान्य समझ'

हाल में चुनाव आयुक्तों ने कहा, ''विजेता कोई पाप नहीं कर सकता, अपनी पार्टी छोड़कर सत्ताधारी दल का दामन थाम लेने वाला न केवल तमाम अपराधबोधों से मुक्त रहता है, बल्कि अपराधी करार दिए जा सकने की संभावना भी से परे होता है। इस प्रकार की जो ''नई सामान्य समझ' राजनीतिक नैतिकता में पांव पसार रही है, उसे तमाम राजनीतिक दलों, राजनेताओं, मीडिया, नागरिक समाज से जुड़े संगठनों, संवैधानिक प्राधिकारों और बेहतर चुनाव के लिए राजनीतिक शुचिता में विास करने वालों को निशाना बनाना चाहिए।'भारतीय राजनीति में कुछ तो नया घट रहा है, जिसके चलते संवैधानिक प्राधिकार इस प्रकार के बयान दे रहा है।

सतीश पेडणेकर

देशों में सरकारी अधिकारियों को कानून की उल्लंघना पर आम नागरिकों की तुलना में ज्यादा दंड दिया जाता है। माना जाता है कि उन्होंने पद का दुरुपयोग करके समाज को कहीं ज्यादा नुकसान पहुंचा दिया है। यह कानून भारत में लागू किया जाना चाहिए। और यह भी कहना चाहूंगा कि मतदाता के रूप में हम भी दिनोंदिन पक्षपाती होते जा रहे हैं, अपनी पसंद की पार्टी के लिए तमाम तरह के गलत-सलत काम करने को उतावले रहते हैं, और हमेशा अन्य पार्टियों को गरियाने पर आमादा रहते हैं। हाल में चुनाव आयुक्तों ने कहा, ''विजेता कोई पाप नहीं कर सकता, अपनी पार्टी छोड़कर सत्ताधारी दल का दामन थाम लेने वाला न केवल तमाम अपराधबोधों से मुक्त रहता है, बल्कि अपराधी करार दिए जा सकने की संभावना भी से परे होता है। इस प्रकार की जो ''नई सामान्य समझ' राजनीतिक नैतिकता में पांव पसार रही है, उसे तमाम राजनीतिक दलों, राजनेताओं, मीडिया, नागरिक समाज से जुड़े संगठनों, संवैधानिक प्राधिकारों और बेहतर चुनाव के लिए राजनीतिक शुचिता में विास करने वालों को निशाना बनाना चाहिए।'भारतीय राजनीति में कुछ तो नया घट रहा है, जिसके चलते संवैधानिक प्राधिकार इस प्रकार के बयान दे रहा है। हालिया चार घटनाओं पर दृष्टिपात करें। पहली घटना दिल्ली में सत्ताधारी पार्टी के विधायकों को कथित आपराधिक गतिविधियों के आरोप में गिरफ्तार किए जाने से संबंधित है। गिरफ्तारी का यह सिलसिला महीनों चला। कहना मुश्किल है कि क्या इसी के चलते दिल्ली नगर निगम के चुनावों में इस पार्टी को बड़ी हार का सामना करना पड़ा। लेकिन ''जीत के इस फामरूले'को बिहार में भी दोहराया गया, जहां सत्ता में सहयोगी दल के खिलाफ चौबीस घंटे के भीतर आपराधिक मामले दर्ज किए गए। एक पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ने औपचारिक रूप से कहा है कि काले धन का इस्तेमाल लोक सभा चुनाव के मुकाबले राज्य सभा के चुनाव में कहीं ज्यादा होता है। लेकिन यह फमरूला गुजरात से राज्य सभा के चुनाव में इस बार काम नहीं आया। ऐसा चुनाव आयोग की उस व्यवस्था के चलते हो सका, जिसमें कह दिया गया था कि जो विधायक अपने मत को गोपनीय नहीं रख पाएंगे उनका मत अवैध माना जाएगा। सत्तारूढ़ पार्टी ने एकदम से दम भरा कि चुनाव आयोग के इस आदेश को अदालत में चुनौती देगी। इस पर कर्नाटक में सत्तारूढ़ पार्टी ने पूर्व मुख्यमंत्री के खिलाफ्भापराधिक मामले दर्ज करा दिए। उन पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, जो राज्य सरकार के तहत (जबकि सीबीआई और आयकर विभाग केंद्र सरकार के अधीन हैं) है, की मदद से मामला दर्ज कराया गया। इस पर पूर्व मुख्यमंत्री ने अहद ले लिया कि चुनाव के बाद मौजूदा मुख्यमंत्री को जेल में डाल देंगे। चुनाव आयोग अब विभिन्न राजनीतिक दलों के निशाने पर रहने लगा है, जो भारतीय राजनीति में नई उभरी प्रवृत्ति का संकेत है। यह प्रवृत्ति बेचैन कर देने वाली है क्योंकि चुनाव की शुचिता, स्वतंत्र एवं साहसी चुनाव आयोग पर निर्भर करती है। नई राजनीतिक रणनीति के तहत हो यह रहा है कि विपक्ष के कद्दावर नेताओं, जिनके कार्यकलाप दागी रहे हैं, तक को नहीं बख्शा जा रहा। इस रणनीति के दो फायदे होते हैं-एक तो यह पता चलता है कि सरकार भ्रष्टाचार से लड़ रही है, और दूसरे, विपक्ष की छवि धूमिल करने का भी मौका हाथ आ जाता है। मजे की बात यह कि सत्तारूढ़ पार्टी के एक भी नेता को न तो गिरफ्तार किया गया और न ही कोई सवाल। यदि सत्ताधारी पार्टी का कोई भी सांसद या विधायक दागी नहीं है, तो यह यकीनन अच्छी बात होगी। लेकिन आंकड़ों से पता चलता है कि हकीकत में ऐसा नहीं है। तमाम राजनीतिक पार्टियों में ऐसे जनप्रतिनिधि मौजूद हैं, जिनकी छवि दागदार है। सभी पार्टियों के 30 प्रतिशत से ज्यादा विधायकों और सांसदों के खिलाफ्भापराधिक मामले लंबित हैं। यह बात तो उन्होंने खुद अपने शपथ पत्रों में बताई है ऐसे में हमारे सामने अनेक सवाल दरपेश हैं। पहला तो यह कि कानून का अनुपालन कराने वाली एजेंसियां क्या वाकई राजनीतिक हस्तक्षेप से स्वतंत्र हैं? क्या आयकर विभाग या भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी सत्तारूढ़ पार्टी की दखलंदाजी से स्वतंत्र हैं? क्या ये एजेंसियां भ्रष्टाचार से मुक्त हैं? क्या सरकारें या सत्तारूढ़ पार्टियां उन पर बेजा प्रभाव नहीं डालतीं? क्या करदाता, जिनके दिए करों से ही इन एजेंसियों के वेतन का भुगतान होता है, के रूप क्या हमें चिंतित नहीं होना चाहिए? बहरहाल, इस स्थिति की जड़ में क्या कारण हैं? उम्मीदवारों और पार्टियों द्वारा ज्यादा से ज्यादा पैसा खर्च किए जाने के कारण चुनाव में उनका काफी कुछ दांव पर लगा होता है। इतना पैसा खर्च किए जाने से किसी भी सूरत में चुनाव जीतना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इसीलिए हमें गुजरात में हैरत में डाल देने वाला घटनाक्रम देखने को मिला जो बेंगलुरु में भी चला और आखिर में चुनाव आयोग के फैसले के साथखत्म हुआ। और यह खेल खेला गया राज्य सभा की मात्र एक सीट के लिए, जिसके लिए विपक्ष के एक प्रमुख नेता निशाने पर थे। आज हमारे नागरिकों के लिए एक व्यवस्था है, तो राजनेताओं के लिए दूसरी। नागरिकों की बेहद ज्यादा जांच-परख होती है, उन्हें हर तरीके से आधार कार्ड से जोड़ दिया गया है। हजारों एनजीओ का पंजीकरण निरस्त कर दिया गया है, लेकिन राजनीतिक दलों के लिएऐसा सोचा तक नहीं गया। उनकी कोईजांच-परख नहीं होती। यह व्यवस्था अतार्किक है, और लंबे समय तक नहीं चलने वाली। इन तौर-तरीकों को रोकने के लिए अनेक उपाय करने होंगे। चुनाव आयोग को राजनीतिक पार्टियों का निशाना बनने से रोकना होगा। उसके पास इतने अधिकार होने ही चाहिए ताकि किसी विधायक की खरीद-फरोख्त और निष्ठा बदल की स्थिति में उसके खिलाफ कार्रवाईकर सके। हमारी पहली निष्ठा भारत के लोगों और अपने समाज के प्रति होनी चाहिए न कि किसी राजनीतिक पार्टी विशेष के प्रति। ऐसे ही तो थे हम पहले लेकिन आज जो हैं, वैसा तो हमें राजनीति ने बना डाला है।

चलते चलते

नेता होते ही खतरे सार्वजनिक

ईमानदार व्यक्ति के नेता होते ही खतरे सार्वजनिक हो जाते हैं। ईमानदारी की हनक में वह सबसे पहले तो सबको बेईमान ठहराता है। उन्हें चोर करार देता है और उन पर थूकता है। फिर हेकड़ी से जता देता है कि मैं आ गया हूं। अब मुझसे तो तुम कोई उम्मीद रखना मत। मैं तो तुम्हें बख्शूंगा नहीं। फिर वह सबको लज्जित करते हुए,

ईमानदारी के बड़े खतरे हैं जी। ईमानदार व्यक्ति जब तक अपने आप तक सीमित रहता है तो ईमानदारी के खतरे भी उसके और घर-परिवार तक ही सीमित होते हैं। पर ईमानदार व्यक्ति के नेता होते ही खतरे सार्वजनिक हो जाते हैं। ईमानदारी की हनक में वह सबसे पहले तो सबको बेईमान ठहराता है। उन्हें चोर करार देता है और उन पर थूकता है। फिर हेकड़ी से जता देता है कि मैं आ गया हूं। अब मुझसे तो तुम कोई उम्मीद रखना मत। मैं तो तुम्हें बख्शूंगा नहीं। फिर वह सबको लज्जित करते हुए, शर्मिंदा करते हुए, उन्हें लानतें देते हुए सीख देता है-सरकार से बस लेते रहो। उसे कुछ देते हुए तो तुम्हारी नानी मरने लगती है, पेट में मरोड़ उठने लगते हैं। रोने लगते हो। जैसे अब तेल की बढ़ती कीमतों के लिए रो रहे हो। पर अगर कार रखते हो, मोटरसाइकिल-स्कूटर रखते हो तो पैसा है न तुम्हारे पास। भूखे तो नहीं मर रहे न। भीख तो नहीं मांग रहे न। तो फिर महंगा तेल खरीदते हुए तुम्हें इतना दर्द क्यों हो रहा है। अफोर्ड कर सकते हो न। तो करो न। दो सरकार को पैसा। यह पैसा किसी और के पास थोड़े ही जा रहा है। सरकार के पास ही तो जा रहा है। और सरकार उसे गरीबों पर खर्च करती है। गरीब ने कहा-हुजूर मैं तो गरीब ही हूं। पर लोग बताते हैं कि तेल की कीमत बढ़ने से हर चीज की कीमत बढ़ जाती है। हुजूर, माई-बाप तेल महंगा होने से सब्जी महंगी हो रही है। आटा-दाल सब महंगा हो रहा है। ईमानदार नेता उसे हिकारत से देखता है। तुम अगर गरीब तो अपनी वजह से हो। मौका मिलते ही तुम भी बेईमानी करने लगते हो, चोरी-चकारी करने लगते हो, बिकने लगते हो, पैसा लेकर, दारू की बोतल लेकर वोट देने लगते हो, बिकाऊ हो तुम। तुम्हारे साथ यही होना चाहिए।

इसी लायक हो तुम। इस पर किसान ने कहा-हुजूर माई-बाप मैं तो किसान हूं। आत्महत्या करना मेरी नियति है। फिर भी मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं अपने पम्प के लिए, अपने ट्रैक्टर के लिए तेल इस्तेमाल करता हूं और वह महंगा हो रहा है। ईमानदार आदमी उसे हिकारत से देखता है-अच्छा सिंचाई के पम्प इस्तेमाल करते हो, खेती के लिए ट्रैक्टर इस्तेमाल करते हो। कुलक हो? तुम्हें भी तो सब कुछ सरकार से ही चाहिए न। सरकार से अपने कर्ज़े माफ कराओ और तेल भी सस्ता चाहो। लानत है तुम पर!

मुद्दा

क्रिकेट के नियमों में बदलाव

क्रिकेट के नियमों में बदलाव होना कोई नई बात नहीं है। खेल को दिलचस्प और सुरक्षित बनाने के लिए नियमों में बदलाव होता रहा है। इस बार भी किए गए बदलावों में एक को छोड़कर बाकी सब कुछ सामान्य है। अंपायर को फुटबाल और हॉकी खेल की तरह खिलाड़ी को लाल कार्ड दिखाकर मैदान से बाहर निकालने का अधिकार देकर इस जेंटलमैंस गेम की आत्मा को ही मार दिया गया है। नये नियम के मुताबिक मैदान में बेकाबू व्यवहार करने वाले खिलाड़ियों को अंपायर लाल कार्ड दिखाकर पूरे मैच के लिए बाहर बैठा सकता है। इसमें अंपायर को धमकाना, गलत ढंग से शारीरिक संपर्क करना या हिंसक व्यवहार शामिल होगा। यह सभी आईसीसी नियमों में लेवल चार के अपराध हैं। लेवल दो और तीन के अपराधों को पहले की तरह आईसीसी आचार संहिता के हिसाब से देखा जाता रहेगा।किसी भी खेल में अनुशासन का महत्त्व हमेशा रहा है और क्रिकेट में तो इसके खास मायने हमेशा रहे हैं। पर अंपायर को इतने अधिकार दिए जाने पर वह निरंकुश भी हो सकता है। इस वजह से संभव है कि आगे कभी इस संबंध में अंपायर के फैसले की समीक्षा का विकल्प तलाशने की जरूरत पड़ जाए। वैसे भी आप देखें तो फुटबाल और हॉकी में लाल और पीला कार्ड दिखाने की व्यवस्था होने के बाद मैदान में हिंसक घटनाओं में कमी तो नहीं आई है। इन खेलों के मुकाबले क्रिकेट में इस तरह की हिंसक घटनाएं बहुत ही कम देखने को मिलती हैं। इसलिए मुझे लगता है कि क्रिकेट की आत्मा को मारने वाले इस नियम की अभी तो कोई जरूरत महसूस नहीं की जा रही थी। हां इतना जरूर है कि आक्रामक स्वभाव वाले क्रिकेटरों को खेलते समय दिमाग थोड़ा ठंडा रखना होगा। आईसीसी द्वारा 28 सितम्बर 2017 से लागू किए जाने वाले कुछ नियम ऐसे हैं, जिनका बल्लेबाजों को फायदा मिलेगा, कुछ नियम खेल में एकरूपता लाने वाले हैं। पॉपिंग क्रीज के अंदर शरीर को कोई हिस्सा और बल्ला हवा में भी होने पर बल्लेबाज को आउट नहीं देने का बल्लेबाजों को बहुत लाभ मिलेगा। आप अक्सर देखते हैं कि कोई बल्लेबाज आगे निकलकर खेलता है और कई बार गेंद खेलने से चूकने पर उसका बल्ला या शरीर का हिस्सा हवा में पॉपिंग क्रीज के अंदर होने पर भी वह आउट हो जाता है। नये नियम के मुताबिक बल्ले की लंबाई और चौड़ाई पर पहले की तरह पाबंदी जारी रहेगी। अब बल्ले की ऐज की मोटाई 40 मिलीमीटर और गहराई 67 मिलीमीटर तय कर दी गई है। बल्लों को लेकर आईसीसी नियमों में स्पष्टता की कमी की वजह से से डेनिस लिली एल्यूमीनियम के बल्ले से खेलने लगे थे। मैथ्यू हेडन ने तो अजब तरह की बल्ला बनवा लिया था। इसलिए बल्ले की लंबाई और चौड़ाई पहले ही निर्धारित कर दी गई थी। अब बल्ले के ऐज की मोटाई और बल्ले की गहराई का नियम लागू हो जाने पर भारी बल्ले से खेलने वाले वॉर्नर और स्मिथ जैसे बल्लेबाजों को इसका नुकसान हो सकता है। वॉर्नर के बारे में कहा जाता है कि वह 1.24 किलो वजन वाले बल्ले से खेलते हैं। ऐसे कई अन्य खिलाड़ियों को इस नियम से नुकसान हो सकता है। लेकिन बल्लों को लेकर एकरूपता लाना भी जरूरी था। वहीं अंपायर को यह अधिकार भी दिया गया है कि यदि कोई गेंदबाज जानबूझकर फ्रंट फुट पर नो बॉल डालता है तो वह उसे गेंदबाजी करने से रोक सकता है। नये नियम के मुताबिक फील्डर को सीमी रेखा पर कैच को मैदान के अंदर ही पकड़ना होगा। कई बार फील्डर सीमा रेखा से बाहर जा चुकी गेंद को भी हवा में उछलकर पहले हाथ से अंदर उछालता है और फिर अंदर आकर कैच पकड़ लेता है। लेकिन अब फील्डर को हवा में उछलकर भी कैच सीमा रेखा के अंदर ही पकड़ना होगा। इसी तरह टी-20 क्रिकेट में भी डीआरएस का इस्तेमाल करना स्वागतयोग्य कदम है। टी-20 में यदि किसी मैच में 10 या उससे कम ओवर फेंके जाने हैं, तब भी गेंदबाज को दो ओवर कम-से-कम फेंकने को मिलेंगे। नियम 28 सितम्बर के बाद शुरू होने वाली सीरीजों में लागू होंगे।

पाक को मुंहतोड़ जवाब

आभा स्वामी

'पाकिस्तान अब टेररिस्तान है' यह कहते हुए भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 72वें अधिवेशन में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहिद खाकन अब्बासी के भारत विरोधी प्रलाप का यथोचित उत्तर दिया। यह पाकिस्तानी नेताओं की सकींर्ण मानसिकता का ही परिचायक है कि संयुक्त राष्ट्र जैसे विश्व मंच पर जाकर भी उनकी दृष्टि भारत से आगे कहीं नहीं देख पाती। अपने पूर्ववर्तियों की तरह अब्बासी ने अभी अपने भाषण का ज्यादातर हिस्सा कश्मीर के बहाने भारत पर केंद्रित रखा। उल्टा चोर कोतवाल को डांटे की तर्ज पर उन्होंने भारत पर ही आतंकवाद फैलाने और संघर्ष विराम का उल्लंघन करने के गंभीरोप मढ़ दिए। जब वो इस हद तक गए, तो उचित ही था कि भारत जवाब देने के अपने अधिकार का उपयोग करता। तो संयुक्त राष्ट्र स्थित भारत के स्थायी मिशन में प्रथम सचिव ऐनम गंभीर ने दुनिया के सामने पाकिस्तान की सच्चाई रखी। कहा, 'अपने छोटे इतिहास में पाकिस्तान आतंकवाद का समानार्थी स्थल बन गया है। पाकिस्तान में हाल में नेशनल असेंबली के लिए हुए एक उपचुनाव में खूंखार दहशतगर्द हाफिज सईद के संगठन जमात-उद-दावा से जुड़ी पार्टी ने अपना उम्मीदवार उतारा था।

बाद में उसने एलान किया कि वो 2018 का आम चुनाव लड़ेगी। जानकारों ने कहा है कि इसके जरिए पाकिस्तानी सेना और खुफिया एजेंसी (आईएसआई) आतंकवादियों को देश की मुख्यधारा राजनीति में लाने की कोशिश कर रही हैं। उचित ही है कि भारतीय प्रतिनिधि ने इस खतरनाक घटनाक्रम की तरफ दुनिया का ध्यान खींचा। पाकिस्तान ने दशकों से आतंकवाद को अपने रणनीतिक हितों को साधने का जरिया बना रखा है। ताजा घटनाक्रम का परिणाम यह हो सकता है कि आतंकी तत्व वहां की शासन-व्यवस्था के मुख्य कर्ता-धर्ता बन जाएं। इसके अभावह नतीजे होंगे। और ये नतीजे सिर्फ भारत को ही नहीं, बल्कि सारी सभ्य दुनिया को भुगतने होंगे। ज्या विश्व समुदाय ऐसे अंदेशों को पर्याप्त गंभीरता से ले रहा है? फिलहाल, भारत ने उसे आगाह कर अपना पर्ज़ निभाया है। लेकिन इससे कोई ठोस फर्क पड़ेगा, ऐसी उम्मीद का कोई आधार नहीं है। इसलिए कि पाकिस्तान जैसे देशों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिहाज से संयुक्त राष्ट्र अब तक एक निष्प्रभावी संस्था साबित हुआ है।

वहां बातें खूब होती हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय नियमों को ठेंगे पर रखने वाले देशों के खिलाफ सार्थक कदम उठाने पर कोई आम-सहमति नहीं बन पाती। उत्तर कोरिया के उद्दंड आचरण के संदर्भ में भी ये बात बार-बार जाहिर हुई है। ऐसे ही उदाहरणों के कारण संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता पर अब गहरे सवाल उठने लगे हैं। इन परिस्थितियों में ऐसी आशा का कोई कारण नहीं है कि पाकिस्तानी हरकतों पर लगाम लगाने की कोई अंतरराष्ट्रीय पहल होगी। फिर भी उसे कारगर जवाब देना जरूरी था। वहां के प्रधानमंत्री ने बहुपक्षीय मंच पर द्विपक्षीय मसले उठाकर भारत पर तथ्यहीन आरोप लगाए, तो भारतीय प्रतिनिधि के पास उन्हें उनकी ही भाषा में जवाब देने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। संतोष की बात है कि ये काम उन्होंने बखूबी किया।

त्रेता युग के महानायक पुरुषोत्तम राम ने अपने समय में धरती पर जिस मर्यादा और विचारशीलता का सूत्रपात किया था, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक और प्रेरक है। हमारे समाज में हमेशा ही पुरु ष को राम और नारी को सीता जैसे गुण- संपन्न बनने, उनके आदशरे पर चलने की सीख दी जाती है। सर्वविदित है कि राम के लिए कुछ भी असंभव नहीं था, बावजूद इसके उन्होंने मानवोचित मर्यादा में रहते हुए ही अपने कर्त्तव्यों का निष्पादन किया। आज के बनावटी व्यवहार और दिखावटी भौतिक संस्कृति के बीच क्या हम रंचमात्र भी उनके जैसा बन पाने की चेष्टा करने की सोचते हैं?

मर्यादा के सच्चे प्रतीक राम

राम नाम लेते ही सजीव हो उठती है एक ऐसी मूरत जो शील गुण, धीर-गंभीर, न्यायप्रिय, अपने परिजनों को जरा-सा भी कष्ट न होने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ। इसलिए तो हर माता-पिता राम जैसे पुत्र की कामना करते हैं और स्त्री अपने पति में राम जैसे सुंदर-सुसंस्कृत की छवि देखती है। 'राम' शब्द दिखने में जितना सुंदर है, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है इसका उच्चारण। 'राम' कहने मात्र से शरीर और मन में अलग तरह की प्रतिक्रिया होती है, जो हमें आत्मिक शांति देती है। हजारों संत और महात्माओं ने राम का नाम जपते-जपते मोक्ष प्राप्त किया है। कहते हैं कि बलशालियों में सर्वाधिक बलशाली राम हैं, लेकिन राम से भी बढ़कर श्रीराम जी का नाम है। हनुमान, लक्ष्मण, सुग्रीव, रावण से लेकर कबीर, तुलसी और गांधी तक सभी राम का नाम ही जपते रहे हैं। राम नाम की महिमा ही कुछ ऐसी है कि इसको जपने से संपूर्ण मानसिक ताप मिट जाते हैं। मृत्यु के बाद भी राम के नाम को सत्य माना जाता है। राज्य हो तो रामराज्य की कल्पना की जाती है। यदि आंखों के सामने छाए अंधकार में राम नाम पुकारा जाए तो वह दीप बनकर हमें रास्ता दिखाता है। सेतुबंध बनाया जा रहा था, तब सभी को संशय था कि क्या पत्थर भी तैर सकते हैं? क्या तैरते हु ए पत्थरों का बांध बन सकता है? तो इस संशय को मिटाने के लिए प्रत्येक पत्थर पर 'राम' का नाम लिखा गया। हनुमानजी भी सोच में पड़ गए कि बिना सेतु के मैं लंका कैसे पहुंच सकता हूं लेकिन राम का नाम लेकर वे एक ही छलांग में पार कर गए समुद्र। भगवान राम के जन्म के पूर्व इस नाम का उपयोग ईर के लिए होता। ब्रह्म, परमेश्वर, ईर आदि की जगह पहले 'राम' शब्द का उपयोग होता था। इसलिए इस शब्द की महिमा और बढ़ जाती है। तभी तो कहते हैं कि राम से भी बढ़कर श्रीराम का नाम है। 'राम' शब्द की ध्वनि हमारे जीवन के सभी दुखों को मिटाने की ताकत रखती है। यह हम नहीं, ध्वनि विज्ञान पर शोध करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि राम नाम के उच्चारण से मन शांत हो जाता। कलियुग में भी राम का ही सहारा लिया जा रहा है। कहते हैं कि कलियुग में सबकुछ महंगा है, लेकिन राम का नाम ही सस्ता है। सस्ता ही नहीं, सभी रोग और शोक की एक ही दवा है- राम। वर्तमान में ध्यान, तप, साधना और अटूट भक्ति से भी श्रेष्ठ है राम का नाम जपना। भागमभाग जिंदगी, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, धोखे पर धोखे, माया और मोह आदि सभी के बीच मानवता जब हताश और निराश होकर आत्महत्या करने लगती है तब सिर्फ राम नाम का सहारा ही उसे बचा सकता है। यदि श्रीराम के जीवन चरित्र को गहनता से परखेंगे तो पाएंगे कि वे क्यों सर्वगुण संपन्न हैं? क्यों राम के समान नीति, राज्य, धर्म, वचन और सत्य का अनुग्रह करने की बात कही जाती है। उनके जिन गुणों को हम 'रामचरित मानस' या 'रामायण' में पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है कि वे सब आज ही लिखे गए हों क्योंकि अक्षरश- वही चीजें आज हम हजारों साल बाद देख रहे हैं। इसलिए राम के गुण श्रेष्ठ हैंनीति कुशल और न्यायप्रिय श्रीराम को जानकर ही हम यह बात समझ सकते हैं कि विषम परिस्थितियों में भी वे नीति सम्मत रहे। उन्होंने वेदों और मर्यादा का पालन करते हुए सुखी राज्य की स्थापना की। स्वयं की भावना और सुखों से समझौता कर न्याय और सत्य का साथ दिया। फिर चाहे राज्य त्यागने, बाली का वध करने, रावण का संहार करने या सीता को वन भेजने की बात ही क्यों न हो। सम्मान और तप की श्रेष्ठता माता-पिता की आज्ञा को सिर झुकाकर शिरोधार्य करना राम का सबसे बड़ा गुण है, जो आज के संदर्भ में एकदम असंभव है। सहनशीलता और धैर्य भगवान राम का एक और गुण है। माता कैकेयी की आज्ञा से वन में 14 वर्ष बिताना, समुद्र पर सेतु बनाने के लिए तपस्या करना, सीता को त्यागने के बाद राजा होते हुए भी संन्यासी की भांति जीवन बिताना, जमीन पर सोना, राजमहल में रहकर कंद-मूल खाना उनकी सहनशीलता की पराकाष्ठा है। सुशासन भगवान राम ने दया कर सभी को अपनी छत्रछाया में लिया। उनकी सेना में पशु, मानव और दानव सभी थे और उन्होंने सभी को आगे बढ़ने का मौका दिया। सुग्रीव को राज्य, हनुमान, जामवंत व नल-नील को भी उन्होंने समय-समय पर ने तृत्व करने का अधिकार दिया। सभी के साथ बराबरी का भाव रखते हुए उन्हें कदम-कदम पर निर्देशित किया और सुशासन का पाठ पढ़ाया। दोस्ती और स्नेह में भेदभाव नहीं केवट हो या सुग्रीव, निषादराज या विभीषण- हर जाति, हर वर्ग के मित्रों के साथ भगवान राम ने दिल से करीबी रिश्ता निभाया। मित्रों के लिए भी उन्होंने स्वयं कई संकट झेले। शबरी के जूठे बेरों को अमृत समझ कर गले उतारा। आज क्या इसकी कल्पना की जा सकती है? घर में खाना बनाने वाला नौकर मालिक के साथ बैठ नहीं सकता, भले ही उसका बनाया खाना वे स्वाद से खाएं। बेहतर प्रबंधक भगवान राम न केवल कुशल प्रबंधक थे, बल्कि सभी को साथ लेकर चलने वाले थे ; सभी को विकास का अवसर देते थे और उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग किया करते थे । उनके इन्हीं गुणों की वजह से लंका जाने के लिए उन्होंने और उनकी सेना ने पत्थरों का सेतु तैयार कर लिया था। सौतेले भाई से सबसे ज्यादा स्नेह भगवान राम के तीन भाई लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न सौतेली मां के पुत्र थे, लेकिन उन्होंने सभी भाइयों के प्रति सगे भाई से बढ़कर त्याग और समर्पण का भाव रखा और स्नेह दिया। यही वजह थी कि भगवान राम के वनवास के समय लक्ष्मण उनके साथ वन गए और राम की अनुपस्थिति में राजपाट मिलने के बावजूद भरत ने भगवान राम के मूल्यों को ध्यान में रखकर सिंहासन पर रामजी की चरण पादुका रख जनता को न्याय दिलाया। भरत के लिए आदर्श भाई, हनुमान के लिए स्वामी, प्रजा के लिए नीति-कुशल और न्यायप्रिय राजा, सुग्रीव और केवट के परम मित्र और सेना को साथ लेकर चलने वाले व्यक्तित्व के रूप में भगवान राम को पहचाना जाता है। उनके इन्हीं गुणों के कारण उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के नाम से पूजा जाता है। सही भी है, किसी के गुण और कर्म ही उसकी पहचान बनाते हैं।

> माना जाता है कि राम नाम के उच्चारण से मन शांत हो जाता है। कलयुग में भी राम का ही सहारा लिया जा रहा है। कहते हैं कि आज सब कुछ महंगा है, राम का नाम ही सस्ता है

> यदि श्रीराम के जीवन चरित्र को गहनता से परखेंगे तो पाएंगे कि वे क्यों सर्व गुण संपन्न हैं। क्यों राम के समान नीति, राज्य, धर्म , वचन और सत्य का अनुग्रह करने की बात कही जाती है

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के समान आदर्श पुरुष, आदर्श मित्र, आदर्श भाई, आदर्श पुत्र, आदर्श गुरु, आदर्श शिष्य, आदर्श धर्मात्मा, आदर्श पति, आदर्श स्वामी, आदर्श सेवक, आदर्श वीर, आदर्श दयालु, आदर्श शरणागत वत्सल और आदर्श संयमी इस जगत के इतिहास में शायद ही कोई दूसरा हुआ हो। श्रीराम की तुलना में एक श्रीराम ही हैं और ऐसे श्रीराम का पुण्य जन्म दिवस चैत्र शुक्ल नवमी है। रावण का वध, दानवों का विनाश, दैत्यों को मारने तथा धर्म की प्रतिष्ठा एवं सज्जनों के परित्राण के लिये स्वयं श्रीहरि राम के रूप में अवतीर्ण हुए। श्रीराम विश्वमूर्ति हैं, ज्ञानगम्य हैं, सर्वात्मा हैं। उन्होंने बहुतों को साथ लेकर चलने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानी है। उनका जीवन मंत्र था, 'भूमा वै सुखं नाल्पे सुखमस्ति' अर्थात 'बहुतों के साथ चलने में ही सच्चा सुख है, अल्प में नहीं।' अपने मन को शुद्ध करो, ज्ञान की सीमा का विस्तार करो, समभाव और सहजभाव से अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाओ, स्वयं आनंदित रहकर दूसरों को आनंदित करना ही राम का रामत्व है

सभी कामनाएं पूरी करता नवमी व्रत

चैत्र शुक्ल नवमी को 'श्रीरामनवमी' का व्रत होता है। 'अगस्त्य संहिता' के अनुसार, यह व्रत मध्याह्नव्यापिनी दशमीविद्धा नवमी को करना चाहिए। यह चैत्र शुक्ल पक्ष की मध्याह्न से शुरू होने वाली दशमीयुक्त नवमी तिथि व्रत के लिये अत्यंत शुभ है।

यदि उस दिन पुनर्वसु नक्षत्र का योग भी हो जाए, (सौभाग्य से इस वर्ष आठ अप्रैल के दिन चैत्र शुक्ल नवमी-दशमी तथा पुनर्वसु नक्षत्र का शु भ योग बन रहा है) तो वह अतिशय पुण्यदायिनी होता है। नवमी को व्रत-उपवास करके दशमी के दिन पारण करने की शास्त्राज्ञा है। शास्त्र वचन है कि पुनर्वसु नक्षत्र से संयुक्त नवमी तिथि सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। इस दिन जो राम नवमी का व्रत करता है, उसके अनेक जन्मार्जित पापों की राशि भस्मीभूत हो जाती है, उसे भगवान विष्णु का परमपद प्राप्त होता है।

पूजन विधि

'अगस्त्य संहिता' के अनुसार, चैत्र शुक्ल नवमी के दिन पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में जब सूर्य अन्यान्य पांच ग्रहों की शुभ दृष्टि के साथ मेष राशि पर विराजमान थे, तभी साक्षात भगवान श्रीराम का माता कौशल्या के गर्भ से जन्म हुआ। इसलिए उस दिन उपवास व्रत रखकर भगवान राम की पूजा करना

तथा अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार दान-पुण्य करना अनेक पापों को भस्म करने में समर्थ है। शास्त्रों ने बताया गया है कि कोई भी व्रत हो, उसके लिये श्रद्धा, भक्ति और नियम-निष्ठा अवश्य होनी चाहिए। बिना इनके मन की अशुद्धता और पवित्रता कदापि दूर नहीं हो सकती।

अत: इस दिन उपवास और पूजन द्वारा उन महापुरुष के कल्याणकारी चरित्र का अनुचिंतन और अनुशीलन होना चाहिए। व्रत के एक दिन पूर्व अष्टमी को इंद्रिय-संयम का पालन करते हुए ऊषावेला में उठना चाहिए। शांतचित्त से नित्यकर्म की समाप्ति के बाद ध्यान करना और विद्वान ब्राह्मण को पूजा के लिए आचार्य के रूप में आमंत्रित करना चाहिए। आचार्य से रामकथा का श्रवण करते हुए रात्रि में भूमि पर शयन करें। नवमी के दिन स्वस्थचित्त होकर आचार्य के निर्देशानुसार घर के उत्तर की ओर एक सुंदर और सुसज्जित मंडप बनवाकर, उसमें श्रीरामजी की पूजा करनी चाहिए। दिन में आठों पहर राम की कथा और उनका कीर्तन तथा स्तोत्र-प्रार्थना आदि के साथ गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, कपूर, कस्तूरी आदि पूजा-द्रव्यों से भगवान श्रीराम की प्रतिमा को विधिवत प्रतिष्ठित कर अर्चना करनी चाहिए। साथ ही, श्रीराम भक्त हनुमान की पूजा भी करनी चाहिए। हवन भी कराना चाहिए। इस तरह पूजन करने और सांस्कृतिक वातावरण होने से मन तथा घर की शुद्धि हो जाती है।

बेटियां ही बनेंगी दुर्गा!

नवरात्रों में कन्याओं का पद पूजन किया जाता है, उन्हें भोजन कराया जाता है, उनमें देवी के दर्शन किये जाते हैं। कितना अच्छा लगता है, नारी को सदियों से पूजने वाले देश में यह सब देखकर। पर सच क्या है, यह भी छुपा नहीं है किसी से। नौ दिन का सम्मान, पूजन, खिलाना-पिलाना एक तरफ और रोज की दुत्कार, उपेक्षा, दमन, गर्भ में मार देने की प्रवृत्ति एक तरफ, क्या यही है इस देश का सच?

छोड़ें दिखावा

खुद को आधुनिक, प्रगतिवादी, उदार व नई सोच का सिद्ध करने वाले देश में जब हम हकीकत को देखते हैं तो स्वयं तथा समाज को उसी गहरे गर्त में पाते हैं, जहां पाषाण काल में थे। पुरुषवादी सोच हमें छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। नारों में, दिखावे में आधुनिकता का मुखौटा लगाकर घूमना हमें खूब आता हैं। अच्छा हो कि इस बार हम यह झूठ छोड़कर पूरे साल बेटियों को बढ़ाएं व बचाएं।

हमें बदलना ही होगा

न्यायालय भले ही नजीर दे रहे हों, पर हम बदलने को तैयार नहीं हैं। एक को सजा मिलती है और दूसरा बेटी का गला घोटकर, शान से थाने में जुर्म इकबाल करने पहुंच जाता है। और सबक देने वाला फैसला मजाक बन जाता है। कहने के लिए तो लिंग भेद की कोई जगह नहीं है, पर जब अपने घर की बात आती है, तो जायज-नाजायज सब भूल कर बेटे को बेटी पर तरजीह देने से नहीं हिचकिचाते। अगर हम अपना, देश, समाज व दुनिया का भला चाहते हैं तो हमें ऐसी मानसिकता बदलनी होगी।

मौत का उपहार क्यों

अपनी मर्जी से जीवनसाथी चुनने का अधिकार लड़कियों को देने के लिए हम कतई तैयार नहीं हैं और यदि वह अपना यह अधिकार लेने का साहस करती है तो उसके हिस्से में आती है जिल्लत, कसवाई या मौत। जाति, गोत्र, वर्ग संप्रदाय या हैसियत के बहाने से लड़की को दबाने का कोई मौका हम हाथ से नहीं जाने देते हैं। तथाकथित सम्मान के कम होने मात्र की आशंका से ही 'पूजनीय कन्या' को मौत के आगोश तक में सुला देते हैं। यदि वह सच में ही पूज्या हैं तो उसे यह मौत का उपहार क्यों?

सबसे ज्यादा मार कन्या पर

युवा दुनिया के हालात दिल दहलाने वाले हैं। बढ़ते अनाचार और टूटती बिखरती मर्यादाओं की सबसे ज्यादा मार लड़की पर पड़ती है, उसके उत्थान और प्रगति का श्रेय संस्थाएं, व्यक्ति, सरकार और समाज बड़े ही जोर-शोर से लेते हैं, पर आज भी लड़की को कभी दैहिक तो कभी मानसिक संत्रास से गुजरने के लिए बाध्य करते हैं। बचपन से जवान होने तक एक डर में ही जीने को विवश होती है कन्या।

दें उसे उसके हक

बेशक बेटियों ने नये से नये क्षितिज नापे हैं पर कई मुकामों पर वह आज भी वहीं खड़ी हैं, जहां वह आज से पचास साल पहले खड़ी थीं। पढ़ी-लिखी लड़कियों ने बहुत कुछ पाया है तो बहुत कुछ गंवाया भी है, जो उसके लिए कहीं ज्यादा जरूरी था। अपने अधिकारों की कीमत लड़कियों को चुकानी पड़ी है। तो क्या उसे पूजने से ज्यादा जरूरी उसे अपने अधिकार देना नहीं होगा? इस बार कर ही डालिए यह पुण्य कार्य।

सार्थक बनाएं नवरात्र

बेशक आज की लड़की हर क्षेत्र में लड़कों से बेहतर कर रही है पर, दकियानूसी समाज और सोच ने लड़की को बराबर होने से रोककर उस पर घोर अत्याचार किया है। उसके साथ अन्याय किया है। सं वेदनशील लोग आसानी से समझ सकते हैं कि इन परिस्थितियों में नवरात्र या कन्यापूजन कितना थोथा और खोखला हो जाता है। कितना अच्छा हो कि हम आज के समय के तराजू पर कन्या को निष्पक्षता से तौलें और उसको उसका हक दें। तभी सार्थक होगा सच में नवरात्र का पर्व और कन्या पूजन।

कपड़ा व्यापारी ने जीएसटी का अनोखा विरोध किया

बिल बुक पर लिखा 'कमल का फूल हमारी भूल', कहा- जीएसटी के दौरान थी नाराजगी

सूरत.शहर के एक कपड़ा व्यापारी ने जीएसटी का अनोखा विरोध किया। उसने अपनी बिल बुक पर ही कमल का फूल हमारी भूल लिख दिया। यह मामला सोशल मीडिया पर वायरल होते ही कपड़ा व्यापारी से सवाल पूछे जाने लगे। तो कपड़ा व्यापारी ने कहा कि वह भाजपाई है और जीएसटी के दौरान सरकार से नाराजगी थी। यह नाराजगी रिंगरोड माकेट इलाके में कपड़े का व्यवसाय करने वाले शामजी नाम के व्यापारी ने व्यक्त की थी। शामजी को कई फोन कॉल आए तो उन्होंने जिस बिल बुक पर कमल का फूल हमारी फूल छपा था उसे नष्ट कर दी।

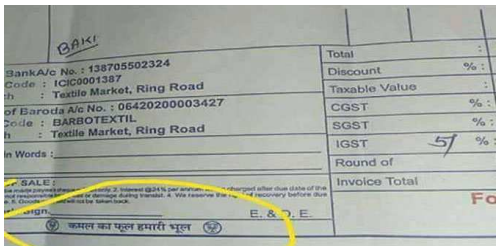

जीएसटी लागू होने के बाद से ही हो रहा है सरकार का विरोध

जीएसटी लागू होने के बाद से ही सूरत के कपड़ा व्यापारी केंद्र की नीतियों का विरोध कर रहे हैं। पहले तो आंदोलन प्रदर्शन और फिर जुलाई में 20 दिन तक हड़ताल की गई। कई बार पुलिस के डंडे भी झेलने पड़े।

बाद में कहा- बिल बुक प्रिंट करने वाले ने की साजिश

शामजी ने बताया कि धर्मेश मान को उन्होंने बिल बुक प्रिंट करवाने के लिए दी थी। पचास बिल बुक में उसने ऐसा प्रिंट कर दिया और मैंने बिना देखे एक बिल इश्यू भी कर दिया। वहीं सोशल मीडिया पर वायरल किया गया। मैं खुद व्यापारी हूं, भाजपा या कांग्रेस क्या किसी भी राजनीतिक दल का विरोधी नहीं हूं।

हम कपड़ा व्यापारियों को बदनाम करने की साजिश की जा रही है।

इस बार लोग सुधार लेंगे भूल

सूरत शहर कांग्रेस प्रमुख हसमुख देसाई ने कहा कि सिर्फ कपड़ा व्यापारी ही नहीं, बल्कि राज्य व देश के लोगों को पता चल गया है कि उन्होंने क्या भूल की थी। अब गुजरात के चुनाव में लोग अपनी भूल सुधार लेंगे।

150 सीटों के लक्ष्य के साथ भाजपा ने चुनावी कवायद तेज की

अहमदाबाद (ईएमएस)। गुजरात विधानसभा चुनाव में 150 सीटों के लक्ष्य को लेकर भाजपा ने कवायद तेज कर दी है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने आज गांधीनगर स्थित पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में चुनाव संबंधी बैठकें कीं। जिसमें अमित शाह ने जिला प्रमुख और महासचिव के साथ चर्चा कर जिलेवार स्थिति की समीक्षा की। साथ ही केन्द्र सरकार के कामकाज को जिलेवार जिम्मेदारी सौंपने की रणनीति बनाने पर भी चर्चा की की। अमित शाह की मौजूदगी में हुई बैठकों में मुख्यमंत्री विजय रूपाणी, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष जीतु वाघाणी, राष्ट्रीय महासचिव और गुजरात प्रभारी भूपेन्द्र यादव, केन्द्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला, मनसुख मांडविया, पूर्व मुख्यमंत्री आनंदीबेन पटेल इत्यादि मौजूद रहे।

कांग्रेस अगले सप्ताह जारी कर सकती है उम्मीदवारों की पहली सूची

अहमदाबाद (ईएमएस)। कांग्रेस गुजरात विधानसभा चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की पहली सूची अगले सप्ताह जारी कर सकती है। कांग्रेस ने करीब 60 जितनी सीटों पर उम्मीदवारों के नाम तय कर लिए हैं।

सूत्रों के मुताबिक मौजूदा विधायकों के साथ निर्विवादित सीटों पर उम्मीदवारों का चयन कर लिया गया है। 29 सितंबर को बालासाहब थोराट की अध्यक्षता में होनेवाली स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में चयन किए गए उम्मीदवारों की सूची मंजूरी दिए जाने की संभावना है। पहली सूची में मौजूदा 43 विधायकों के साथ ही निर्विवादित सीटों को चुन लिया गया है। जिसमें प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं ने दावेदारी की है, उन्हें टिकट मिलना तय है। इन नेताओं में अमरेली से परेश धानाणी, खेडब्रह्मा से अश्विन कोटवाल, दहेगाम से कामिनीबा राठौड़, दाणीलीमडा से शैलेष परमार, माणावदर से जवाहर चावडा, ऊना से पूंजा वंश, गरबाडा से चंद्रिका बारिया, छोटाउदेपुर से मोहनसिंह राठवा और दरियापुर से ग्यासुद्दीन शेख शामिल हैं। ये सभी मौजूदा विधायक हैं और इन सभी को टिकट मिलना लगभग तय है। इसके अलावा डभोई से सिद्धार्थ पटेल, पोरबंदर से अर्जुन मोढवाडिया, जसदण से कुंवरजी बावलिया, माणसा से बाबूजी ठाकोर, खेरालू से जयराजसिंह परमार, बायड से जशुभाई पटेल, पाटण से किरीटभाई पटेल, विसनगर से किरीटभाई पटेल, ऊंझा से कांतिभाई पटेल, विजापुर से विजयभाई पटेल, चाणस्मा से चेडजी ठाकोर, बेचराजी से अमृतजी ठाकोर, गांधीनगर उत्तर से निशित व्यास, गांधीनगर दक्षिण से हिमांशु पटेल, साबरमती से नारण पटेल, ठक्करबापानगर से जेडी पटेल, बापूनगर से दिनेश शर्मा, वेजलपुर सीट से लाखा भरवाड़, खंभालिया से विक्रम माडम, जामनगर से करशन करमूल, जामजोधपुर से रमेश सापरिया, कालावड से दिनेश परमार, जामनगर ग्रामीण से जवल पटेल को टिकट मिलने की संभावना है। सूत्रों के मुताबिक अगले सप्ताह 3 अक्टूबर के आसपास कांग्रेस अपने उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर सकती है। कांग्रेस अबकि बार कई नए चेहरों को मैदान में उतार सकती है। सोशल मीडिया पर प्रचार और राहुल गांधी के गुजरात दौरे के बाद कांग्रेस आत्मविश्वास से लबरेज है और इसीलिए उम्मीदवारों की चयन प्रक्रिया तेज कर दी है। कांग्रेस पहले ही मौजदा विधायकों को टिकट देने का वादा कर चुकी है और इन विधायकों को टिकट मिलना पक्का है। हांलाकि 5 से 6 विधायक अपना निर्वाचन क्षेत्र बदल सकते हैं, जिसमें कच्छ जिले के अबडासा विधानसभा सीट से मौजूदा विधायक शक्तिसिंह गोहिल अबकि बार भावनगर पश्चिम सीट से चुनाव लड़ सकते हैं।

हत्या के मामले में भाजपा विधायक समेत तीन दोषियों ने किया सरैंडर

राजकोट (ईएमएस)। गोंडल के सनसनीखेज नीलेश रैयाणी हत्याकेस में दोषी करार दिए गए भाजपा विधायत जयराजसिंह जाडेजा, अमरजीतसिंह जाडेज और महेन्द्रसिंह राणा ने आज गोंडल की कोर्ट में सरैंडर कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने तीनों दोषियों को 30 सितंबर तक आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया था। राजकोट जिले के गोंडल हुए नीलेश रैयाणी हत्या केस में गोंडल के सत्र न्यायालय से दोषमुक्त हुए जयराजसिंह जाडेजा समेत तीनों आरोपियों को गुजरात हाईकोर्ट ने दोषी करार देते हुए सजा सुनाई थी। जिसके बाद जयराजसिंह जाडेजा समेत तीनों दोषियों ने गुजरात हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी, परंतु सुप्रीम कोर्ट ने अर्जी को खारिज कर दिया था। साथ ही आदेश दिया था कि 30 सितंबर तक अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण का आदेश दिया था। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के मुताबिक भाजपा विधायक समेत तीनों दोषियों ने आज गोंडल के सत्र न्यायालय के समक्ष सरैंडर कर दिया। इस मौके पर लोगों की भीड़ जुटने की आशंका देखते हुए पुलिस ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए थे। सत्र न्यायालय ने तीनों दोषियों को गोंडल सबजेल भेज दिया है। दरअसल यह मामला 2004 का है। वाछरा गांव निवासी नीलेश मोहनभाई रैयाणी, जयेश साटोडिया और रामजी मारकणा यूटिलिटी जीप में गोंडल के बालिका छात्रालय में आयोजित एक कार्यक्रम में गए थे। जहां से राजवाडी की ओर लौट रहे थे। उस दौरान तीन गाडियों में आए जयराजसिंह, अमरजीतसिंह जाडेजा समेत अन्य आरोपियों ने गोलीबारी कर नीलेश रैयाणी की हत्या कर दी थी। आरोपियों ने विक्रमसिंह की हत्या का बदला लेने के उद्देश्य से साजिश के तहत नीलेश की हत्या की होने का आरोप लगाया गया था। हत्या के मामले में भाजपा विधायक समेत तीन दोषियों ने किया सरैंडर।

मां ने देखा तो तेंदुए के जबड़े बचाई बेटे की जान

सूरत (गुजरात). तापी जिले के वालोड में तेंदुए से बेटे को बचाने के लिए एक मां 10 मिनट तक तेंदुए से उलझी रही। अंत में तेंदुआ भाग गया और मां अपने बेटे को बचाने में सफल रही। हालांकि इस दौरान बेटे के सिर में चोट आई और उसे इलाज के लिए हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया है, जहां उसकी हालत स्थित बताई जा रही है। बताया गया है कि वालोड के कोटी मोहल्ले में मां साजिदा अपने बेटे हनीफ के साथ घर में सोई हुई थी। रात के लगभग 12.30 बजे अचानक तेंदुआ घर में घुस गया और बेटे को उठाकर लेकर जाने लगा। तभी मां साजिदा की नजर तेंदुए पर पड़ गई। बेटे को तेंदुए के जबड़े में देख साजिदा ने धैर्य नहीं खोया और तेंदुए से उलझ गई। वह तब तक तेंदुए से लड़ती रही, जब तक कि उसने बेटे को छोड़ नहीं दिया। अंत में तेंदुआ वहां से भाग गया और वह अपने बेटे को बचाने में सफल रही।

तेंदुआ को पकड़ने के लिए पिंजरा रखा गया

वाडोड रेंज के फारेस्ट ऑफिसर अमृत गामित ने बताया कि नरभक्षी तेंदुए को पकड़ने के लिए पिंजरा रखा है। लोगों ने इसकी शिकायत की है। नरभक्षी तेंदुए को पकड़ने के लिए वन विभाग पूरी तैयारियां कर रहा है।

साजिदा ने कहा- डर जाती तो बेटा चला जाता

साजिदा ने बताया कि जब बेटे की आवाज सुन वह जागी तो बेटा तेंदुए के जबड़े में फंसा था। यह देख वह डर गई, लेकिन अगले ही पल उसने

सोचा कि अगर वह डर जाएगी तो बेटा हाथ से निकल जाएगा। फिर उसने हिम्मत कर पहले शोर मचाई और जब कोई नहीं आया तो खुद तेंदुए से उलझ गई।

उधर, हनीफ का इलाज कर रहे डॉक्टर मंडल ने बताया कि उसके सिर में गंभीर चोट आई है। सिर की चमड़ी के साथ मांस का हिस्सा भी तेंदुआ ने खा लिया है।

उसे सुबह 5 बजे इलाज के लिए लाया गया था। सिर में मरहम-पट्टी कर दी गई है। हाथ में भी फ्रैक्चर है और उसकी हालत नाजुक है। सर्जिकल वॉर्ड में भर्ती कर ट्रीटमेंट किया जा रहा है।

अक्टूबर में भाजपा की करमसद और पोरबंदर से गुजरात गौरव यात्रा

अहमदाबाद (ईएमएस)। आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर भाजपा ने गुजरात गौरव यात्रा का आयोजन किया है। उप मुख्यमंत्री नितिन पटेल की अगुवाई में 1 अक्टूबर को आणंद जिले के करमसद से और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष जीतु वाघाणी के नेतृत्व में 2 अक्टूबर को पोरबंदर से गुजरात गौरव यात्रा का प्रारंभ होगा। इस मौके पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह मौजूद रहेंगे7 यात्रा में प्रदेश प्रभारी भूपेन्द्र यादव, प्रदेश अध्यक्ष जीतु वाघाणी, मुख्यमंत्री विजय रूपाणी, राज्य के मंत्रीगण, केन्द्र समेत प्रदेश संगठन के पदाधिकारी यात्रा के प्रस्थान के वक्त मौजूद रहेंगे।

विधानसभा चुनावों में राज्य के सभी ५०,१२८ मतदान केन्द्रों में होगा वीवीपैट का उपयोग

देश में वीवीपैट सिस्टम का पहली बार उपयोग करने वाला गुजरात पहला बड़ा राज्य

गांधीनगर (ईएमएस) । गुजरात विधानसभा के आगामी चुनाव में राज्य के सभी ५०,१२८ मतदान केन्द्रों पर वोटर वेरिफाएबल पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपैट) सिस्टम मशीन द्वारा मतदान किया जाएगा। वीवीपैट सिस्टम से मतदान प्रक्रिया शुरू करने वाला गुजरात देश का पहला बड़ा राज्य होगा। गुजरात के मुख्य निर्वाचन अधिकारी एवं प्रधान सचिव बीबी स्वैन ने गुरुवार को गांधीनगर में मीडिया के समक्ष इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) और उससे जुड़ी वीवीपैट मशीन का प्रदर्शन करते हुए कहा कि वीवीपैट के इस्तेमाल से मतदाता को पारदर्शिता के अनुभव के साथ नया अधिकार भी मिलेगा।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी बीबी स्वैन ने कहा कि वर्ष २०१२ के चुनावों के दौरान गुजरात में सिर्फ गांधीनगर में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर वीवीपैट सिस्टम का उपयोग किया गया था। आगामी विधानसभा चुनावों में राज्य के सभी मतदान केन्द्रों में वीवीपैट सिस्टम से मतदान आयोजित करने के लिए भारत के पांच राज्यों एवं भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के दो उपक्रमों भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड और इलेक्ट्रॉनिक कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड से ७०,१८२ वीवीपैट मशीनें गुजरात आ रही हैं। वीवीपैट सिस्टम के इस्तेमाल से प्रत्येक वोट के दर्ज होने में ७ सेकंड का समय लगता है। इसके चलते मतदान की समयावधि में भी बढ़ोतरी को लेकर केन्द्रीय चुनाव आयोग से कहा गया है। गुजरात में विधानसभा चुनावों से पूर्व तैयार की गई अंतिम मतदाता सूची के अनुसार मतदाताओं की संख्या ४.३३ करोड़ दर्ज की गई है। इस तरह, २०१२ के मुकाबले मतदाताओं की संख्या में ५२ लाख की वृद्धि हुई है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी बीबी स्वैन ने कहा कि मतदाताओं की संख्या में हुई बढ़ोतरी के चलते मतदान केन्द्रों की संख्या में भी ४५०० की बढ़ोतरी की गई है। इतना ही नहीं, मतदान केन्द्रों में मतदाता समय पर बिना किसी तकलीफ के मतदान कर सकें, इस उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक मतदान केन्द्र में १२०० मतदाता जबकि शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक मतदान केन्द्र में १४०० मतदाता की अधिकतम संख्या निर्धारित की गई है।

इसके लिए पर्याप्त सर्वे कर मतदाताओं की संख्या १२०० से अधिक न हो, मतदान केन्द्र दो किलोमीटर से अधिक दूरी पर न हो तथा बीच में नदी-नाले न आते हों, इस तरह मतदान केन्द्रों की संख्या बढ़ाई गई है।

स्वैन ने कहा कि ईवीएम मशीन में वोट देने के बाद मतदाता वीवीपैट मशीन के जरिए यह देख सकता है कि उसका मत किसे गया है। वीवीपैट सिस्टम मशीन में दर्ज हुए वोट की एक पर्ची निकलेगी, जो सिस्टम में ही रहेगी।

मतगणना बैलेट कंट्रोल यूनिट से ही की जाएगी, लेकिन मतगणना के दौरान किसी अनियमितता या विवाद खड़ा होने की स्थिति में वीवीपैट मशीन की प्रिंटेड स्लीप की गिनती आखिरी मानी जाएगी। स्वैन ने कहा कि वीवीपैट मशीन के प्रदर्शन और संपूर्ण जानकारी के लिए चुनाव आयोग द्वारा अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य के सभी राजनीतिक दल, मीडिया और हरेक मतदाता तक वीवीपैट की जानकारी और प्रदर्शन पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। इसके लिए एक 'जागृति वैन' भी तैयार की जाएगी, जिसमें एक मतदान केन्द्र बनाया जाएगा। यह कोशिश की जाएगी कि यह वैन अधिकाधिक लोगों तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि गुजरात में १० लाख से अधिक ऐसे युवा मतदाता पंजीकृत हुए हैं, जो पहली बार अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। इन युवा मतदाताओं तक वीवीपैट की जानकारी पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा।

अस्पताल के बाथरूम में बच्चे को जन्म देकर महिला फरार

अहमदाबाद (ईएमएस)। शहर के एलिसब्रिज क्षेत्र स्थित ऑथोपेडिक अस्पताल के बाथरूम में एक महिला ने बच्चे को जन्म दिया और नवजात शिशु को वहीं छोड़कर फरार हो गई। बाद में नवजात शिशु को शहर के वीएस अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। एलिसब्रिज पुलिस ने अज्ञात महिला समेत पांच लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक अहमदाबाद के एलिसब्रिज क्षेत्र में डॉ. मनोज जोशी ऑथोपेडिक अस्पताल चलाते हैं। बीती दोपहर को अस्पताल की सफाईकर्मी शांताबेन मकवाणा बैठी हुई थी, उस वक्त करीब 50 साल की आयु की महिला के साथ एक युवती आई। युवती गर्भवती और कमर दर्द की शिकायत लेकर अस्पताल आई थी। जिसके बाद युवती बाथरूम चली गई और 10 मिनट तक उसके नहीं लौटने पर शांता मकवाणा बाथरूम पहुंच गई और युवती से जल्द बाहर आने को कहा। 10 मिनट बाद शांता मकवाणा बाथरूम गई, जहां लहू फैला हुआ था। इस बारे में जब शांता मकवाणा ने युवती से पूछा तो उसने बताया कि टाइम में है। इस बीच एक नर्स बाथरूम पहुंच गई और युवती के कपड़ों पर लहू का दाग देख उससे इस बारे में पूछा। जिसे लेकर युवती और नर्स के बीच तू तू में में शुरू हो गई। इस दौरान युवती के साथ आई महिला और तीन पुरुष वहां पहुंच गए और अस्पताल के स्टाफ के भिड़ गए। इस बीच नर्स डॉक्टर को बुलाने चली गई और युवती समेत पांचों लोग वहां से फरार हो गए। बाद में शांता मकवाणा जब बाथरूम साफ करने गई तो कमोड के पीछे नवजात शिशु को देख चौंक पड़ी। शांता मकवाणा ने फौरन अस्पताल के डोक्टर को बताया। नवजात शिशु जीवित था, जिसे वीएस अस्पताल ले जाया गया, जहां डोक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते ही एलिसब्रिज पुलिस अस्पताल पहुंच गई और युवती समेत पांच लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

रूपाल में हजारों लीटर शुद्ध घी से वरदायिनी माता का अभिषेक होगा आज

गांधीनगर (ईएमएस)। जिले रूपाल गांव में कल होनेवाले वरदायिनी माता के शुद्ध घी से अभिषेक की तैयारियां अंतिम दौर में हैं। कल दोपहर से प्रारंभ होकर शनिवार की सुबह तक हजारों लीटर शुद्ध घी से वरदायिनी माता का अभिषेक किया जाएगा। माताजी की पल्ली नाम से मशहूर इस कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ जमा होती है।

गांधीनगर जिले के रूपाल गांव में हर साल नवरात्र की नवमी को वरदायिनी माता का शुद्ध घी से अभिषेक किया जाता है। 29 सितंबर को वरदायिनी माता के अभिषेक कार्यक्रम का प्रारंभ होगा। रात 12 बजे माताजी की पल्ली पूरे गांव का भ्रमण करती है, जिसमें श्रद्धालु शुद्ध घी से उनका अभिषेक कर अपनी मन्नतें पूरी करते हैं। पिछले साल रूपाल की पल्ली में करीब 6 लाख लीटर शुद्ध घी से वरदायिनी माता का अभिषेक किया गया था। जिसकी कीमत 16 करोड़ रुपए होती है। पल्ली के बाद पूरे गांवभर में घी ही घी नजर आता है, मानों जैसे घी की नदियां बह रही हो।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्प्लेक्स सचीन रेल्वे स्टेशन के पास,सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, एवं तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, फोन नं. 9879141480 संपादक सुरेश मौर्या (पी आर बी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी) E-mail: krantisamay@gmail.com